CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA
ISSN 2231 - 2137

हबीब तनवीर के नाटकों में गीत प्रयोजन

प्रा. चौधरी निलोफर महेबुब, *हिंदी विभाग, श्री. शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी*

Received: 12/08/2017	Edited: 17/08/2017	Accepted: 26/08/2017

शोध सारांश: *प्रारंभिक काल से ही हिन्दी के नाटकों में गीतों का प्रचलन रहा है। भारतेंदु ने तो अपने नाटक में गीतों के माध्यम से भारतीय इतिहास की रुपरेखा ही प्रस्तुत कर दी है। तनवीरजी ने अपने नाटकों में लोकगीतों तथा लोकसंगीतों का सम्मिश्रण किया। लोकगीत मनोरंजन के साथ-साथ जन-जागरण का काम भी करते रहे हैं। हबीब तनवीर ने एक बेहतर समाज और मानवीय मूल्यों की स्थापना के अपने उद्देश्य को अधिक प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करने के लिए अपने नाटकों में गीतों का समावेश किया।*

गीत और संगीत हबीब तनवीर के नाटकों की आत्मा है। गीत और संगीत दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व होने के बाद भी दोनों एक दूसरे के पूरक होते हुए अधिक प्रभावपूर्ण होते हैं। धरती से जुडे संगीत और आधुनिक भावबोध से एक नई शैली विकसित करनेवाले हबीबजी लोक जीवन के द्रष्टा ही नहीं सृष्टा भी हैं। हबीब तनवीर अपने नाटकों में गीतों का अधिक प्रयोग करते हैं, फिर भी वह नाटकों को बोझिल नहीं होने देते बल्कि कथ्य के विकास में गीतों की स्वाभाविक गति चकित करती है।

बीज-शब्द: *हबीब तनवीर, गीत प्रयोजन, हिन्दी नाटक.*

हबीब तनवीर के नाटकों में न सिर्फ छत्तीसगढ़ की लोक धुनों का उपयोग होता है बल्कि विश्व के तमाम अँचलों की लोकधुनें भी कही न कही सुनायी देती है। उनके नाटकों में गुजराती, हरियाणवी, उत्तर प्रदेश के बिदेरिया की धुनें, छत्तीसगढ़ की तो है, ही और बुन्देलखण्ड की धुनों का इस्तेमाल किया है हमारे यहाँ शास्त्रीय और लोक संगीत में इतना करीबी रिश्ता है कि एक नाटक के अन्दर इन दोनों की मौजूदगी एक साथ निभ जाती है।

लोक धुनों पर आधारित उनके गीतों में बसंत के झोंके जैसी ताजगी का अहसास उनके नाटक का संगीत हमेशा साथ-साथ चलता है, न कभी नाटक पर हावी होने की कोशिश और न कभी नाटक से अलगा। रंग संगीत का प्रयोग अपने नाटकों में जब भी वे करते हैं तो उनमें अजब-सी ताजगी और नाटकीयता होती है। वे कहते हैं, "संगीत ऐसा हो जो नाटक के भीतर छुपे हुए अर्थ को भी खोलते हुए आगे बढाए। उनके गायक कलाकारों की दिल छू लेनेवाली आवाज से नाटक की एक-एक परत खुलती जाती है ।"[१]

सच तो यह है कि उनके नाटकों में गीत और नृत्य कभी बाधक नहीं होते वरन नाटक को अधिक पारदर्शी बनाते रहते हैं। "हबीब साहब रंगसंसार से जुडे हमारे बीच सबसे दीर्घकालीन रंगकर्मी है। चालीस के दशक में शुरु हुआ उनका रंगकर्म बिना खंडित हुए रंगसंगीत के साथ लगातार चल रहा है। हबीबजी ने परम्परा को साधने और उसे आधुनिक बनाने का काम किया है। बेख्त की थ्योरी का साक्षात प्रमाण हबीबजी के नाटकों में मिलता है। उनके रंग संगीत में परिवर्तन की इच्छा है। सच तो यह है कि संगीत की सहायता से एक के बाद दूसरे दृश्य में एक तरह गुथे जाते हैं कि नाटक की कथा आगे बढ़ती है। कथानक चलता रहता है, आगे बढ़ता जाता है।"[२]

'आगरा बाजार', 'मिट्टी की गाड़ी , 'हिरमा की अमर कहानी', 'गाँव का नाम ससुराल मोर नाँव दमाद' और 'चरणदास चोर' जैसे नाटकों तक की पृष्ठभूमि में संगीत की महता कभी कम नहीं होती। लय, ताल और स्वर का अद्भूत समन्वय हजारों दर्शकों को देशकाल की सीमा से परे नाटक के कथालोक में ले जाता है, देशी संगीत के विकास की पृष्ठभूमि लोकसंगीत हैं।

लोक मानस का उल्लास मिश्री की तरह और उसकी व्यथा नमक की तरह घुलकर नाटक गायन, वादन और नर्तन रुपी त्रिवेणी के साथ विकसित होता रहता है। संगीत का यही तत्व हमारी जातीय स्मृति है। दर्शक तन्मय होकर नाटक देखते हैं।

'आगरा बाजार' नाटक में हबीबजी ने तत्कालीन दौर में भारत में धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों का वर्णन किया है। राजा और नवाब अय्याशी में डूबे थे। नजीर अकबराबादी ने अपने नज्मों के माध्यम से समाज के इसी हिस्से को दिखाने का प्रयास किया, उसी का आधार लेकर तनवीरजी ने 'आगरा बाजार' की रचना की तत्कालीन स्थिति का वर्णन गीत से करते है -

"है अब तो कुछ सुख्रन का मेरे करोबार बंद
रहती है तब्अ सोच में लैलो - निहार बंद
दरिया सुख्रन की फिक्र का है मौजदार बंद
हो किस तरह न मुंह में जुबां बार-बार बंद

.....

आशिक कहो, असीर कहो, आगरे का है
मुल्ला कहो, दबीर कहो, आगरे का है
मुफलिस कहो, फकीर कहो, आगरे का है
शायर कहो, नजीर कहो, आगरे का है।"[३]

गीत के माध्यम से बताया गया है कि पूरे राष्ट्र में राजनीतिक अस्थिरता के समय आम आदमी के बीच व्याप्त हताशा, कुंठा और असमंजस की स्थिति का चित्रण करता है।

'मिट्टी की गाड़ी' नाटक में अत्याचारी और दम्भी राजा पालक के विरुध्द शर्विलक का राजनीतिक प्रतिरोध है। सत्य का सहज संकेत है। आज के सामाजिक मूल्यों को चुनौती देता-सा प्रतीत होता है। इस गीत की पंक्तियों से यह स्पष्ट है -

"निर्धन का दुख दूर हो कैसे, जब कोई उसका मीत नही
कुछ उसकी मर्यादा इज्जत, कोई जीवन रीत नही
मित्र विमुख अपने बेगाने जल बुझते है स्वप्न सुहाने
घटते चन्द्र के समान उसकी मौत के पल जाने पहचाने
आंसू बनकर बहनेवाले गीत बिना कोई रीत नहीं।"[४]

'चरणदास चोर' दरअसल प्रशासन के खिलाफ एक नाटक है, नाटक में व्यवस्था की बुराइयों को उजागर किया गया है तथा यह बताया गया है कि किस तरह चरणदास अपने प्रण की रक्षा करते हुए मारा जाता है। तब कोरस का यह गीत सत्य को प्रतिष्ठापित करता हुआ नजर आता है -

"एक चोर ने रंग जमाया, सच बोल के।
संसार में नाम कमाया, सच बोल के।
चोरी ही उसका नसीब था पैसे वाला था गरीब था।
बस उसका ये किस्सा अजीब था।"[५]

'हिरमा की अमर कहानी' आदिवासी जनजीवन में उनकी परम्परा और संस्कृति निवास करती है। इस नाटक में छत्तीसगढ़ की एक लोक संस्कृति को उजागर किया है। तितुरबसना रियासत की पूरी आबादी आदिवासी जीवन है और आदिवासी जीवन को सामन्तवादी जीवन नहीं कहा जा सकता आदिवासी राज में सामन्तवादी शासन देखा है। इस राज में लोकतंत्र से परिचित कराने के संघर्ष में लग गए। इस नाटक की चार पंक्तियाँ ही नाटक का मन्तव्य स्पष्ट कर देती है -

"एक अंगूठी न मिलने की खातिर
न मिलने की खातिर, न मिलने की खातिर
कि सुवना फिर गद्दी भी छीनी गई
अंगूठी पे गद्दी भी छीनी गई।"[६]

'देख रहे हैं नैन' नाटक में भारतीय जीवन दर्शन की तात्विक विवेचना यथार्थ के धरातल पर की गई है। यह नाटक मनुष्य के भीतर की त्रासदी और संघर्ष को दिखाना है तथा समाज की कुरीतियों को भी उजागर करता है।

"देख रहे हैा नैन बावरे, देख रहे हैं नैन
छीन लिया दो नैनों ने सब जीवन का सुख चैन
कौन हो तुम क्यों देख रहे हो, मुझसे तुमको काम
दो नैनों ने उलट दिया, होठों पर आया जाम
छीन लिया दो नैनों ने सब जीवन का सुख चैन देख रहे हैं नैन... ।"[७]

लोक संगीत और सुगम संगीत को नाटक की आंतरिक शक्ति के रुप में स्थापित करनेवाले में वे अग्रणी है। इसके साथ ही यह भी सच है कि गीतों और धुनों में पुनरावृत्ति का बोध कई बार होता है। विशिष्टता की अनुभूति का यह वातावरण दर्शकों के बीच स्वत: निर्मित होता जाता है। यह रस में डूबने का अनुभव है। गीत संगीत और संवाद के मेल से भीतर ही भीतर विचार का एक रुपक बनता है और पूरे नाटक में अद्भूत कसावट आ जाती है।

सत्येन्द्र तनेजा हबीब तनवीर के नाटकों में प्रयुक्त गीतों पर लिखते हैं कि "हबीब दर्शकों के प्रति अपनी पूरी जिम्मेदारी समझते थे जिसे वे टोटल थियेटर का आस्वाद प्रदान करना चाहते हैं उनके इस मक़सद को पूरा करने में नाटक के गीत काफी असरदार सिध्द हुए।"[८]

तनवीरजी लोक धुनों के बारे में कहते हैं कि, "मैंने उन धुनों का सम्मिश्रण किया जैसे एक लोकधुन में तबले की चाल बदल दी। एक में थोडी धुन बदल गयी। कई बार छत्तीसगढ़ धुनों को तनवीरजी ने ऑक्रेस्ट्रा की तरह इस्तेमाल किया है। जैसे 'मिट्टी की गाडी' नाटक में 'जोर बलदेव जी का मेला है' गीत के बीच में 'बाजा रे बाजा' गीत आ जाता है। फिर लोगों को पता है कि वहाँ अल्फाज के अर्थो से कोई मतलब नहीं है। वह केवल ध्वनि है। गाना चल रहा है और साथ में बच्चे की गाडी चलती जा रही है। तो लोगों का ध्यान लय और ध्वनि पर है। शब्दों के अर्थ वहाँ मायने नहीं रखते।"[९]

निष्कर्ष के रुप कहा जा सकता है कि हबीब तनवीर के नाटकों में संगीत और नृत्य अलंकरण नहीं है। वो ऊपर से किए गए मतलब उसको कुछ बेहतर बनाने के लिए कुछ ज्यादा रसमय बनाने के लिए किया गया, उपक्रम नहीं है वे उसकी संरचना के उसके ढाँचे के अनिवार्य अंग है। संगीत के बिना वो संभव नहीं है, क्योंकि संगीत और नृत्य के बिना हमारा लोक नाटक संभव नहीं है।

संदर्भ

१. रंग हबीब, भारतरत्न भार्गव,राष्ट्रीय नाटयविदयालय,दिल्ली

२. नाट्यदर्शन,संगीता गुन्देजा, वाणी प्रकाशन,

३. 'आगरा बाजार' - हबीब तनवीर - वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण पृ.सं.४७

४. 'मिट्टी की गाडी' हबीब तनवीर - वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण पृ.सं.

५. 'चरणदास चोर' - हबीब तनवीर - वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण पृ.सं.७९

६. 'हिरमा की अमर काहानी' - हबीब तनवीर

७. देख रहे है नैन - हबीब तनवीर - पुस्तकालय संस्करण १९९६ पृ.सं.३४

८. हिन्दी मासिक पत्र पाखी ९ जुन २०११ अमितेश

९. नाट्यदर्शन - संगीता गुंदेजा, संगीत नाटक अकादमी - वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण पृ.सं.७०